

प्रस्तुत अनुपम सुयोग का लाभ उठाएँ

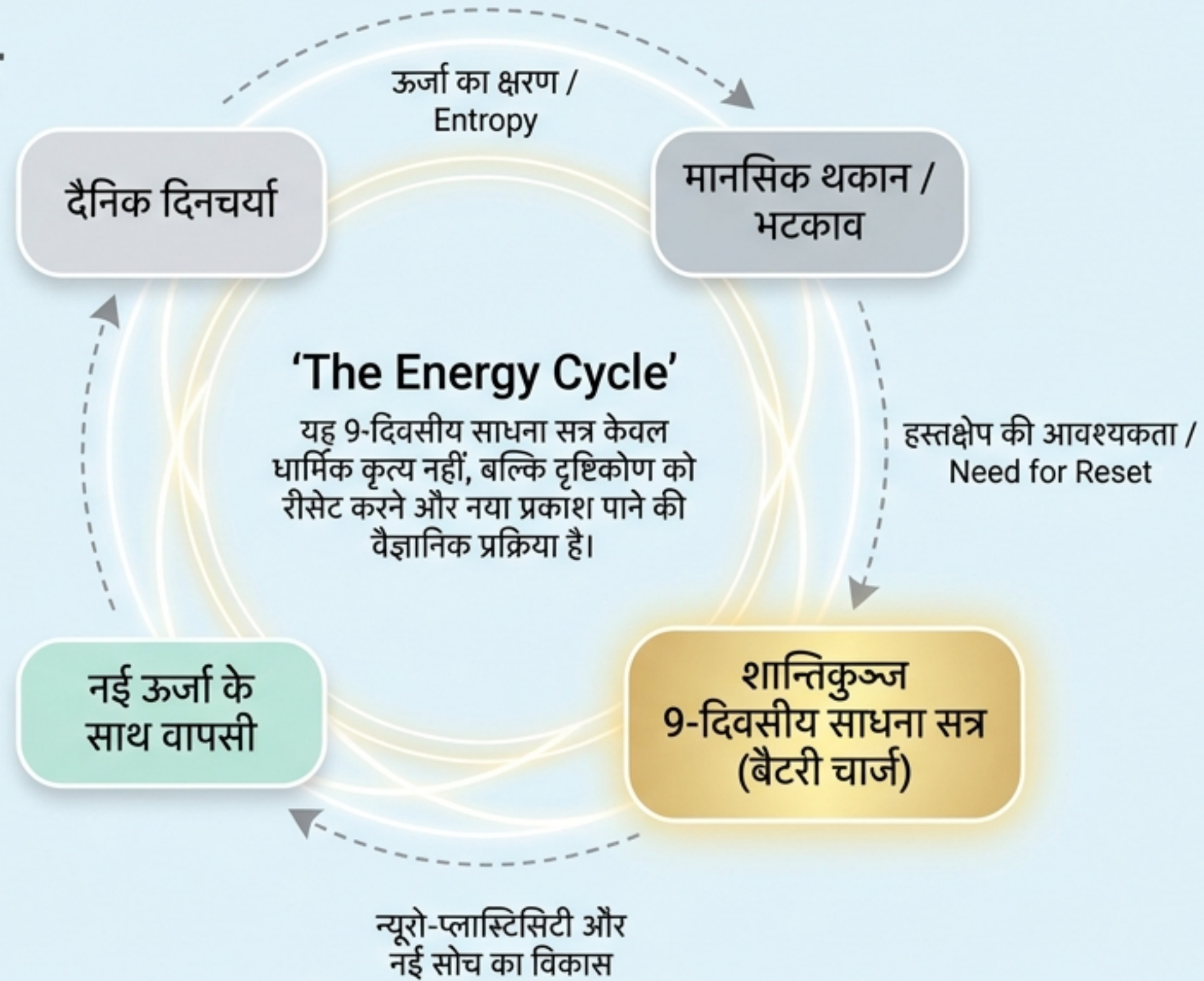
जीवन साधना, विज्ञान और युग-निर्माण का व्यावहारिक ब्लूप्रिंट

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



मानसिक ऊर्जा का क्षरण और 'बैटरी चार्ज' का विज्ञान

आधुनिक जीवनशैली में निरंतर संघर्ष हमारी मानसिक और आध्यात्मिक ऊर्जा को क्षीण कर देता है। विज्ञान इसे 'Cognitive Depletion' (संज्ञानात्मक क्षरण) कहता है।

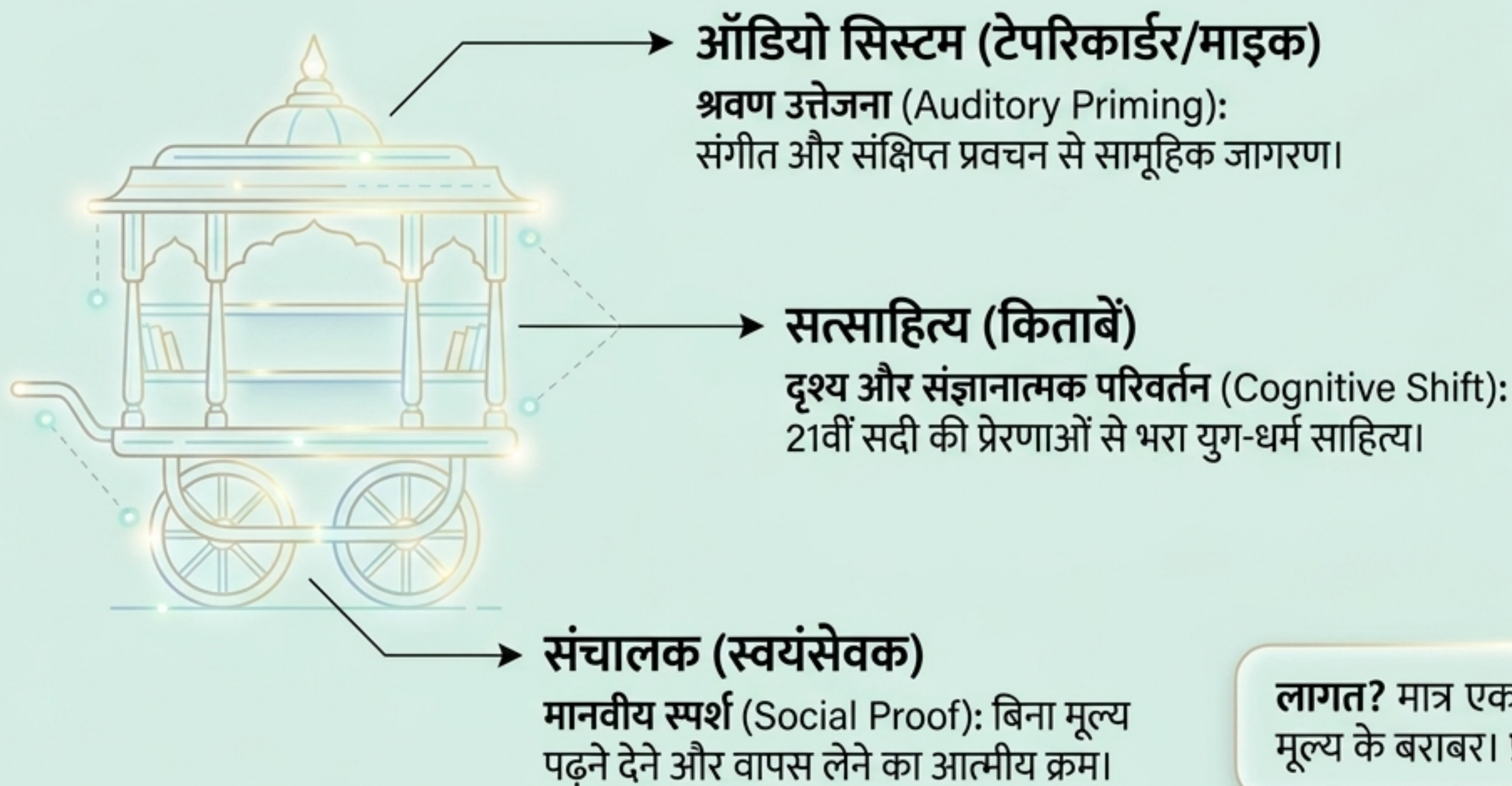


वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचाए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

‘चल ज्ञान मन्दिर’ : वातावरण निर्माण का टूल

मानव मस्तिष्क अपने आस-पास के वातावरण (Environmental Conditioning) से सबसे अधिक सीखता है। ज्ञान रथ एक चलता-फिरता मनोवैज्ञानिक ट्रिगर है।



लागत? मात्र एक तोला सोने के
मूल्य के बराबर। **प्रभाव?** अनंत।

असहयोग से विचार क्रान्ति तक का सफर

इतिहास साक्षी है कि छोटे-छोटे व्यावहारिक कदम बड़े सामाजिक बदलाव (Social Contagion) का रूप ले लेते हैं।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

अतीत
(स्वतंत्रता संग्राम)

खादी की धकेल
गाड़ियाँ

काँग्रेस नेताओं का
अदम्य उत्साह

परिणाम:
राजनैतिक आज़ादी

वर्तमान
(युग निर्माण)

चल ज्ञान मन्दिर

प्रज्ञापीठों का विशाल
नेटवर्क (2400+)

परिणाम: वैचारिक आज़ादी
और नव-जागरण

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

जो पुण्य विशेष पर्वों पर भगवान का रथ खींचने में है,
वही पुण्य आज गली-मुहलों में ‘ज्ञान रथ’ घुमाने में है।

इष्टदेव का आह्वान: कर्मठता ही सच्ची उपासना

मनोविज्ञान 'Locus of Control' की बात करता है। केवल माँगना (External Locus) छोड़ें, स्वयं समाधान बनें (Internal Locus)।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

कामना भरी पूजा
(अनुमान, विनय, माँगना)

SHIFT
(महाकाल का आमंत्रण)

ईश्वरीय योजना में भागीदारी
(विवेक-विस्तार, कर्मयोग)

हनुमान

अर्जुन

शिवाजी

प्रताप

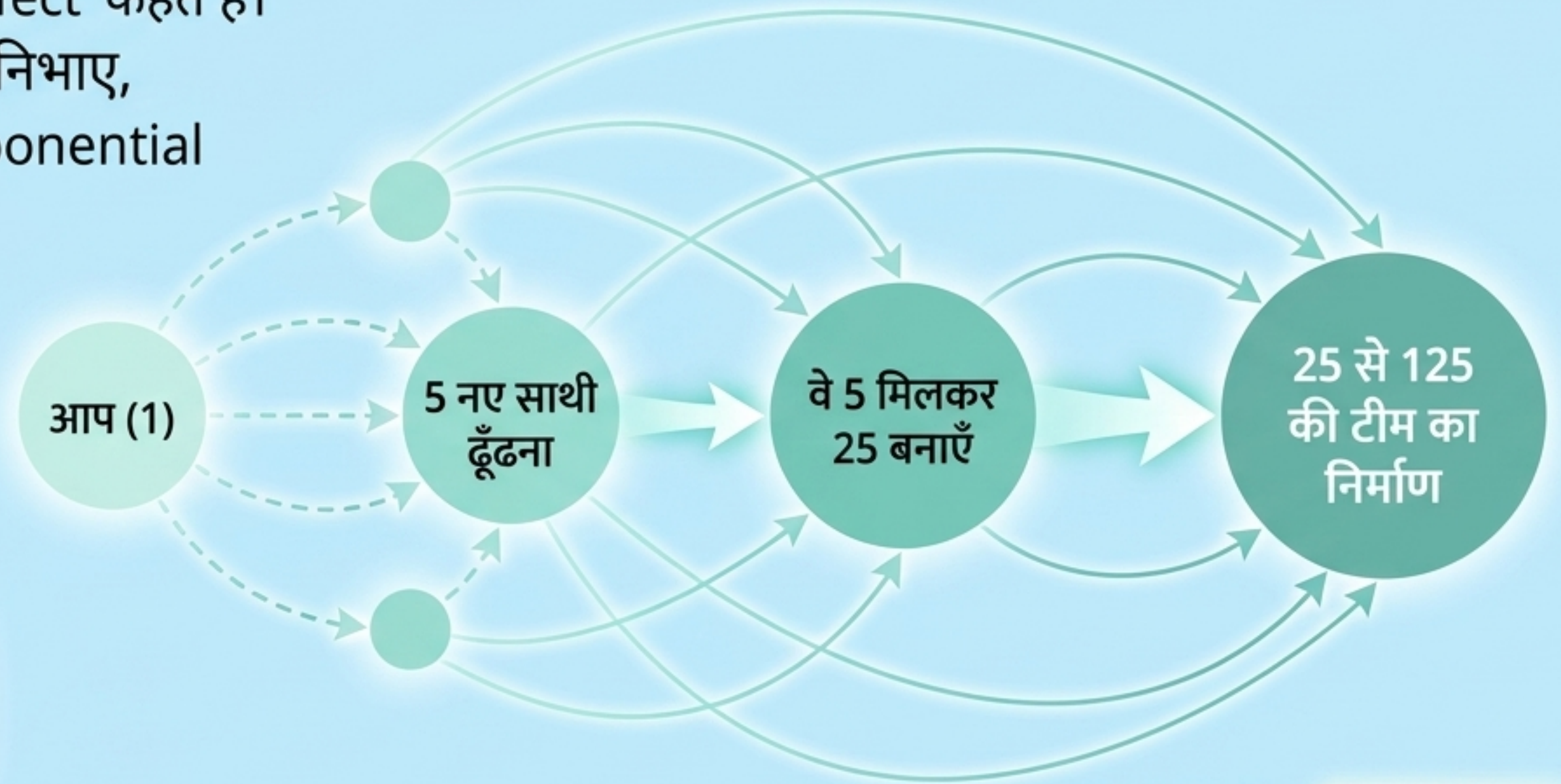
विवेकानन्द

विनोबा

इन सभी ने दिव्य चेतना का आह्वान सुना और कार्यरत हुए।
उनकी उपासना स्वयं इष्टदेव ने पूरी की!

विचार क्रान्ति का गणित: 1 से 125 का नेटवर्क

समाजशास्त्र में इसे 'Network Effect' कहते हैं।
यदि एक व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी निभाए,
तो परिवर्तन ज्यामितीय गति (Exponential
Growth) से फैलता है।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से
“मेरा ज्ञान शरीर ही
जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का
प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना
ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर
को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

इस सतत गुणन प्रक्रिया को
अपनाने से नर-पामर,
‘युग मानव’ में बदल जाते हैं।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

‘पंचायतन’ : युग मानवों की संगठनात्मक इकाई

पाँच व्यक्तियों का एक ऐसा समूह (Mastermind Group)
जो एक समान उद्देश्य के लिए अपनी ऊर्जा को
सिंक्रनाइज़ करता है।



इस पंचायतन में जुड़ने से व्यक्ति का अपना असाधारण परिष्कार भी सुनिश्चित होता है।

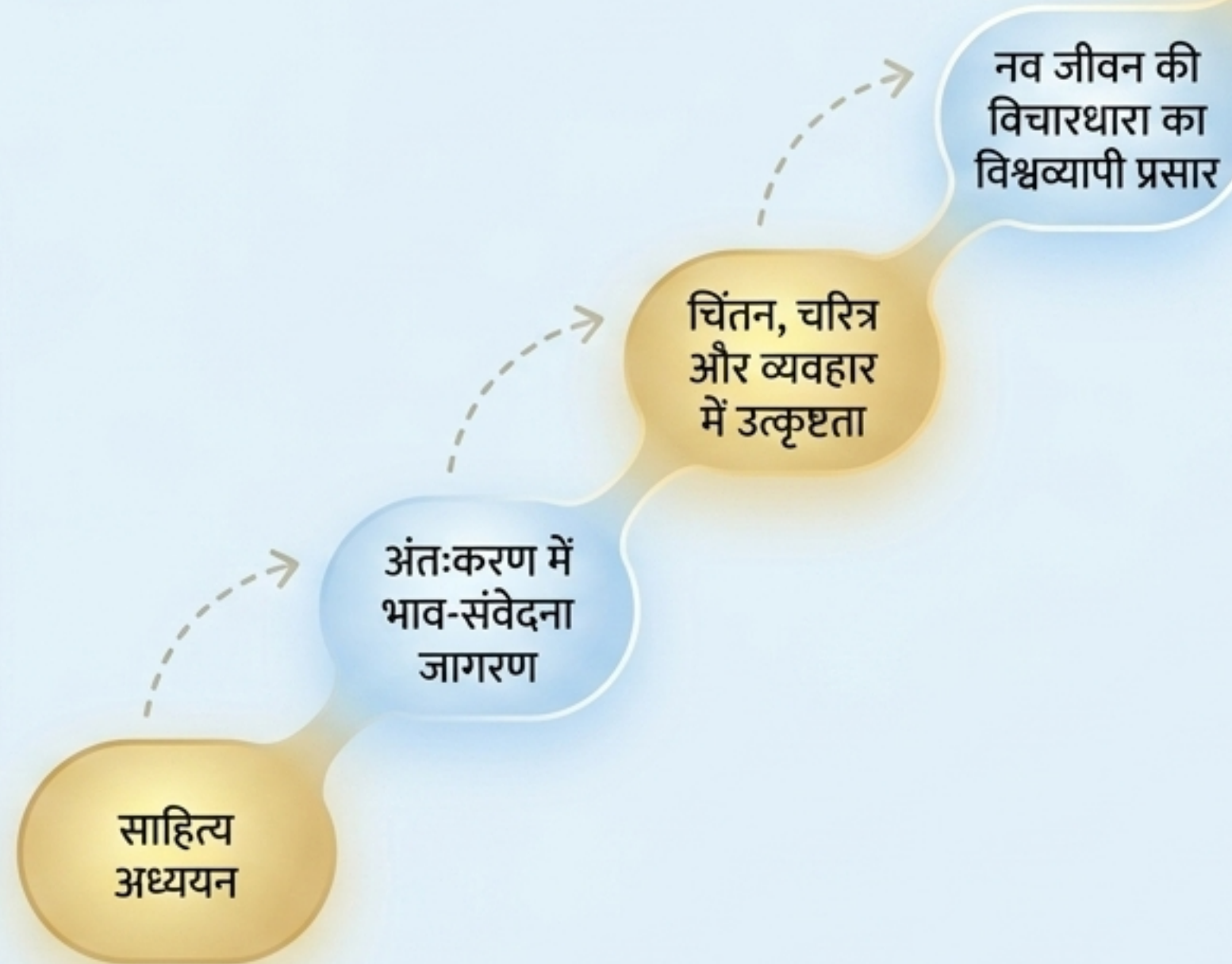
युग-धर्म का एक ही समाधान: विवेक-विस्तार

समस्याओं के घटाटोप (भ्रष्ट चिंतन, दुष्ट आचरण) का निवारण केवल एक वैज्ञानिक और आध्यात्मिक उपचार से संभव है: जनमानस में दूरदर्शी विवेकशीलता जगाना।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

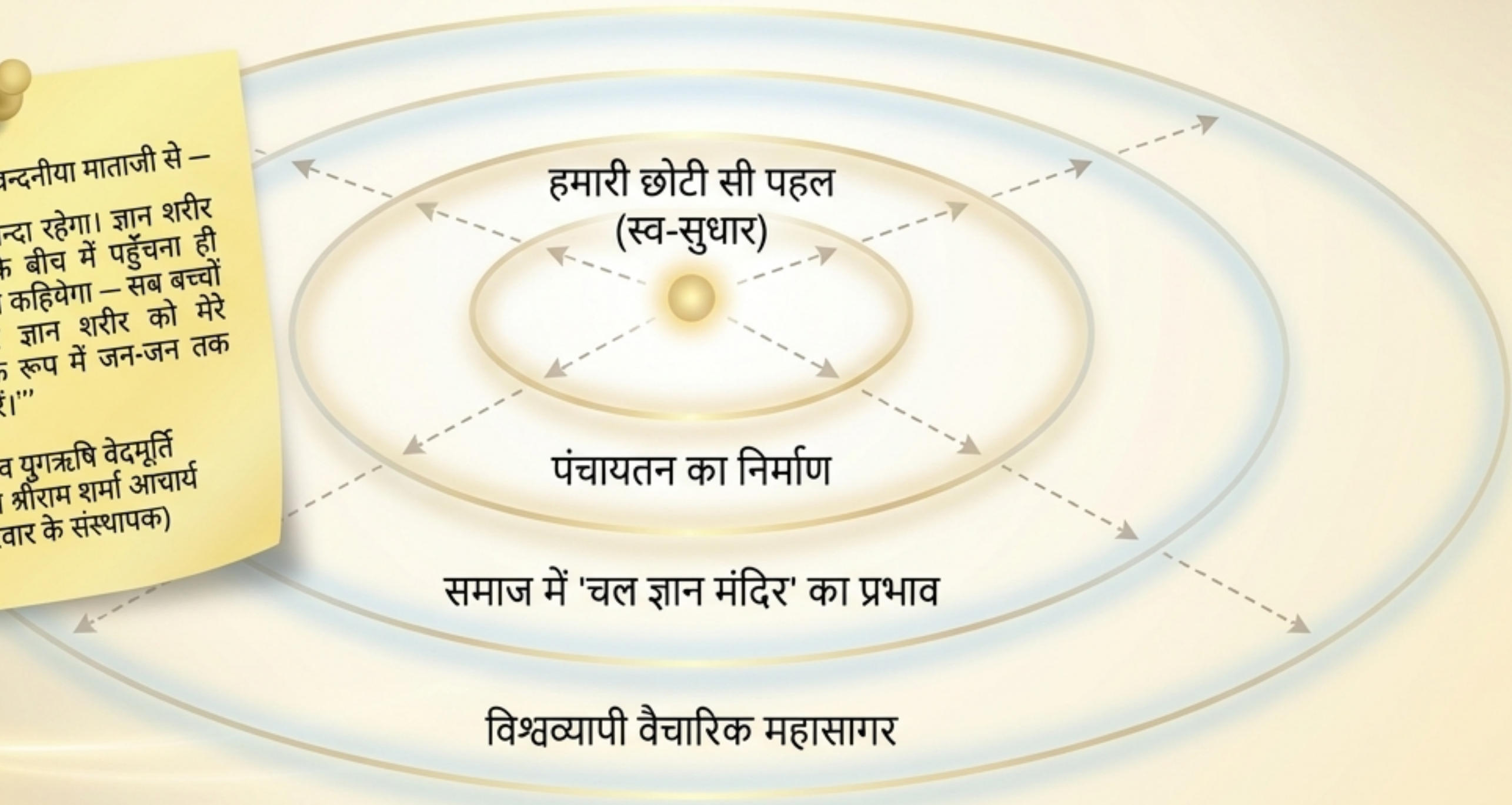


मत्स्यावतार की आकुलता और हमारी भूमिका

जिस प्रकार भगवान का मत्स्यावतार एक छोटे पात्र से शुरू होकर पूरे महासागर में फैल गया था, वैसे ही यह युग-चेतना आज विश्वव्यापी होने के लिए तत्पर है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



प्रस्तुत अनुपम सुयोग: आपका संकल्प क्या है?

क्या आप
वैचारिक
थकान महसूस
कर रहे हैं?

हाँ

नहीं, मैं ऊर्जावान हूँ

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा —
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

शांतकुञ्ज के 9-दिवसीय
साधना सत्र में जाएँ।

क्या आप समाज के लिए
कुछ करना चाहते हैं?

संसाधन हैं

‘चल ज्ञान मन्दिर’
का निर्माण करें।

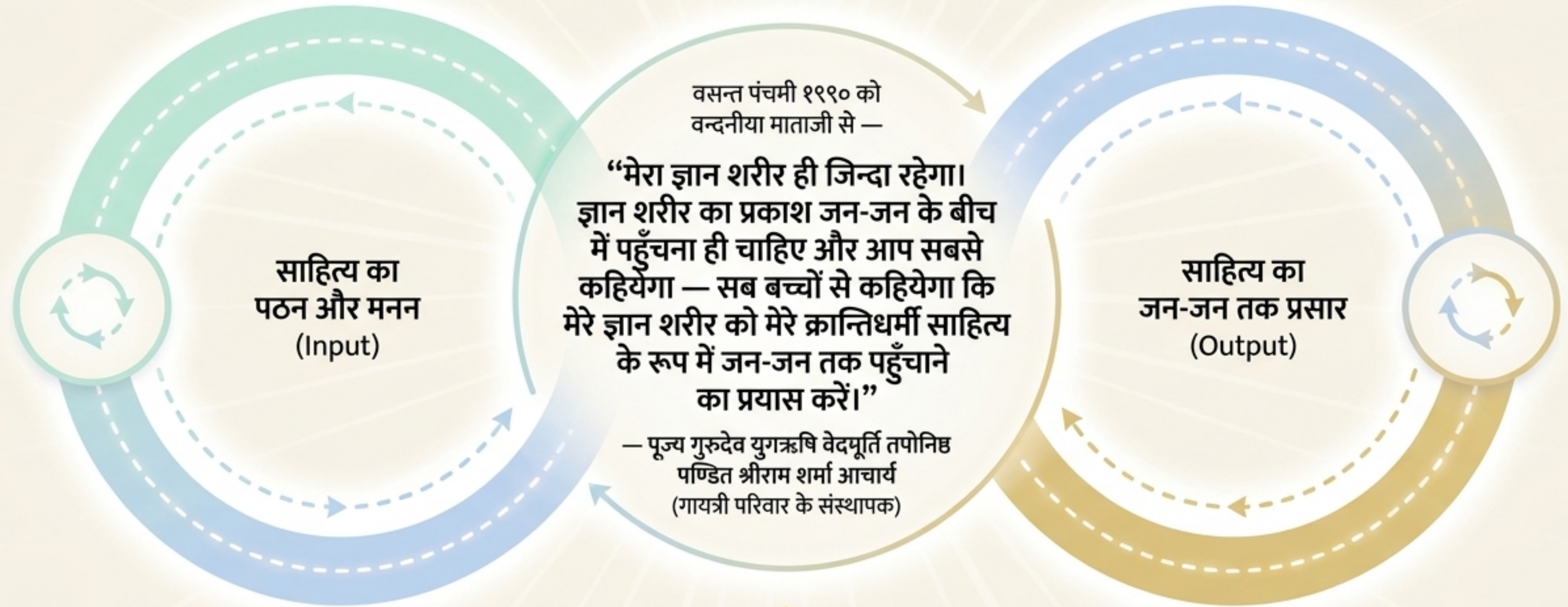
समय है

1 से 5 की रीति-नीति से
‘पंचायतन’ बनाएँ।

अपनी मर्जी की पूजा-उपासना छोड़कर, समय की पुकार सुनें।

ज्ञान शरीर को जीवंत रखने का दायित्व

गुरुदेव का भौतिक शरीर अब नहीं है, लेकिन उनका 'ज्ञान शरीर' उनके क्रान्तिधर्मी साहित्य में स्पंदित है। इसे लागत मूल्य (No Copyright) पर जन-जन तक पहुँचाना ही सच्ची युग-साधना है।



इस साहित्य को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाने का संकल्प लें।
यही आपका समयदान है, यही आपका युग-धर्म है।